इसके नियंत्रण के निम्नलिखित उपाय हैं :–

1) प्रौढ़ कीटों को हाथ से चुनकर उन्हें नष्ट करना।

2) 2–3 सप्ताह के अन्तराल पर इमिडाक्लोपिड 17.8% ई.सी. दवा 0.5 मिली / ली0 पानी दवा को सेन्डोविट या टिपाल (400 मि0ली0) के साथ मिलाकर 2–3 छिड़काव करना चाहिए।

मूंगफली की माहु

सामान्य रूप से छोटे–छोटे भूरे रंग के कीड़े होते हैं। तथा बहुत बड़ी संख्या में एकत्र होकर पौधों के रस को चूसते हैं। साथ ही वाइरस जनित रोग के फैलाने में सहायक भी होती है।

नियंत्रण :– इमिडाक्लोरपिड 0.5 मि0ली0 को 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर देना चाहिए।

लीफ माइनर

लीफ माइनर के प्रकोप होने पर पत्तियाँ पर पीले रंग के धब्बे दिखाई पड़ने लगते हैं। इसके गिडार पत्तियाँ में अन्दर ही अन्दर हरे भाग को खाते रहते हैं और पत्तियाँ पर सफेद धारियाँ सी बन जाती है। इसका प्यूपा भूरे लाल रंग का होता है। इससे फसल की काफी हानि हो सकती है। मादा कीट छोटे तथा चमकीले रंग के होते हैं। मुलायम तनों पर अण्डा देती है।

नियंत्रण :– इमिडाक्लोरपिड 0.5 मि0ली0 को 1 लीटर पानी में घोला छिड़काव कर देना चाहिए।

कटनी एवं भण्डारण

सामान्य रूप से जब पौधे पीले रंग के हो जायें तथा अधिकांश नीचे की पत्तियाँ गिरने लगे तो तुरंत कटाई कर लेनी चाहिए। फलियों को पौधों से अलग करने के पूर्व उन्हें लगभग एक सप्ताह तक अच्छी प्रकार सुखा लेना चाहिए। फलियों को तब तक सुखाना चाहिए जब तक उनमें नमी की मात्रा 10 प्रतिशत तक न हो जायें क्योंकि अधिक नमी वाली फलियों को भंडारित करने पर उस पर बीमारियों का खासकर सफेद फफूंदी का प्रकोप हो सकता है।

उपज :– उन्नत विधियों के उपयोग पर मूंगफली की औसत उपज 18–20 क्विंटल प्रति हेक्टर प्राप्त की जा सकती है।

आलेख

डा0 राजीव कुमार

श्री उदय कुमार सिंह

श्री विनोद कुमार पाण्डेय

मार्गदर्शन

निदेशक प्रसार शिक्षा, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय राँची

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

डा0 राजीव कुमार

वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान

कृषि विज्ञान केन्द्र, पलामू–822102

ई–मेल : kvkpalamu@gmail.com

प्रसार पुस्तिका संख्या 05/2025-26

भाकृअनुप
ICAR

मूंगफली की उन्नत खेती

कृषि विज्ञान केन्द्र, पलामू

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

Scanned with OKEN Scanner

मूंगफली की उन्नत खेती

झारखण्ड के लिए खरीफ तिलहनी फसल के रूप में इसकी संभावना बहुत ही प्रबल है। इस क्षेत्र की मिट्टी एवं जलवायु मूंगफली की खेती के लिए उपयुक्त है। किसान भी मूंगफली की खेती के महत्व एवं लाभों को समझ चुके हैं, इसलिए इसकी लोकप्रियता इस क्षेत्र में और अधिक बढ़ने की संभावना है, जैसा की मूंगफली की खेती के अंतर्गत लगातार बढ़ रहे क्षेत्र को देखने से पता चलता है।

पठारी क्षेत्रों में ऊपरी भूमि, जिसमें धान, रागी एवं अन्य लघु–मोटे अनाजों की खेती की जाती है, में मूंगफली की खेती वर्षा पर आधारित स्थिति में अधिक लाभ के साथ की जा सकती है। इसकी खेती शुद्ध फसल के रूप में की जा सकती है या इसे अरहर के साथ अंतरवर्ती फसल के रूप में भी लिया जा सकता है। 90 से0मी0 की दूरी पर अरहर की दो कतारों को लगातार इसकी अंतरवर्ती फसल लेना किसानों में प्रचलित है।

उत्पादन तकनीक

भूमि का चुनाव

हल्की बलुही दोमट मिट्टी, अच्छी जल निकास सुविधा एवं कार्बनिक पदार्थों से युक्त। 6.5 से 7.0 पी0एच0 वाली मिट्टियाँ मूंगफली की खेती के लिए सर्वोत्तम है।

भूमि की तैयारी

3–4 जुताई, जो 10–15 से0मी0 गहराई पर हल चलाई गई हो। जहाँ तक संभव हो सके खर पतवार के नियंत्रण हेतु गर्मी के मौसम में जुताई करनी चाहिए। अंतिम जुताई के बाद पाट्टा चला देना चाहिए।

उन्नत प्रभेद का चयन

बिरसा मुंगफली–(3–4), बिरसा बोल्ड, जी0पी0बी0डी0–5, जी.जे.जी.–18

उपज क्षमता :– 18–20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर।

बुआई का समय

15 जून से 10 जुलाई तक बुआई का उपयुक्त समय। बिरसा मुंगफली प्रभेदों की बुआई 25 जून तक अवश्य कर लेनी चाहिए जिससे कि हर हालत में फसल हथिया नक्षत्र में होने वाली वर्षा के तुरन्त बाद कटनी के लिए तैयार हो जायें।

बीज दर एवं बुआई

75–80 किलो दाने प्रति हे0 (आगत एवं फैलने वाले किस्मों के लिए) 80–90 किलो दाने प्रति हे0 (मध्य अगात एवं गुच्छे वाले किस्मों के लिए)

कतार के कतार की दूरी 30 से0मी0, पौधा से पौधा की दूरी 10 से0मी0 (गुच्छे वाली किस्म), 45x15 से.मी0 फैलनीवाली किस्म।

मूंगफली की उन्नत खेती

खाद एवं उर्वरक

25:50:20 किलो एन0पी0के0 तथा 10 किलो बोरेक्स प्रति हे0 बुआई से 10–15 दिन पूर्व कम्पोस्ट या गोबर की सड़ी खाद 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से डालकर मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिए। बुआई के समय 12 किलोग्राम यूरिया, डी0ए0पी0 112 किलो तथा 35 किलोग्राम म्युरियेट ऑफ पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से देना चाहिए। अम्लीय मिट्टी में 5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से चुना का व्यवहार 4–5 वर्षों में एक बार करना चाहिए। दीमक से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8.1% ई.सी. का व्यवहार करना चाहिए। बी0एच0सी0 व्यवहार कभी नहीं करना चाहिए।

बीजोपचार

बीजजनित बीमारियों के नियंत्रण हेतु बीजों का उपचार कारबेन्डाजीम 50%WP नामक कवकनाशी दवा 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करना चाहिए। कवकनाशी दवाओं का प्रयोग राइजोबियम कल्चर के प्रयोग से 5–6 घंटे बाद उपचारित कर लेना चाहिए, एक पैकेट 250 ग्राम का कल्चर 10 किलोग्राम बीज के लिए पर्याप्त होता है आधा लीटर पानी एवं 50 ग्राम गुड़ को घोलकर कल्चर में मिलाकर 10 किलोग्राम बीज में मिला देना चाहिए। इस तरह उपचारित करने के बाद बीज को 2–3 घंटे सुखाकर बीज की बुवाई करनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

बुआई के एक दो दिन के अन्दर पेन्डामिथालिन नामक खरपतवारनाशी दवा का 1.5–2 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करने पर लगभग 3–4 सप्ताह तक खरपतवारों पर रोक लगाई जा सकती है। जब पौधों में 3–4 पतियां निकल आए तब 15 दिनों के अंतराल पर 1–2 बार निकाई करना श्रेयस्कर होता है।

पौधा संरक्षण बीमारियाँ –

टिक्का रोग –

यह इस फसल का बड़ा भयंकर रोग है। आरम्भ में पौधे के नीचे वाली पत्तियों के ऊपरी सतह पर गहरे भूरे रंग के छोटे–छोटे गोलाकार धब्बे दिखाई पड़ते हैं ये धब्बे बाद में ऊपर की पत्तियाँ तथा तनों पर भी फैल जाते हैं। संक्रमण की उग्र अवस्था में पत्तियाँ सूखकर झड़ जाती है तथा केवल तने ही शेष रह जाते हैं। इससे फसल की पैदावार काफी हद तक घट जाती है। यह बीमारी सर्कोस्पोरा या सर्कोस्पोरा अरैडिकोला नामक कवक द्वारा उत्पन्न होती है। भूमि में जो रोगग्रसित पौधों के अवशेष रह जाते हैं उनसे यह अगले साल भी फैल जाती है।

नियंत्रण :– इसकी रोकथाम के लिए टेबुकोनाजोल 25.9%EC को 500–600 मिली पानी में घोलकर प्रति हेक्टर की दर से दस दिनों के अन्तर पर दो–तीन दिन छिड़काव करने चाहिए।

किट व्याधियाँ

इस फसल में मुख्य रूप से भुआ पिल्लू का प्रकोप होता है। प्रारम्भिक अवस्था में शिशु कीट झुण्ड में पत्तों पर पाए जाते हैं। प्रौढ़ अवस्था में ये पत्तियाँ बड़ी तेजी से झरने लगती है।

Scanned with OKEN Scanner